International Journal of Advanced Education and Research
ISSN: 2455-5746; Impact Factor: RJIF 5.34
Received: 10-04-2019; Accepted: 14-05-2019
www.alleducationjournal.com
Volume 4; Issue 4; July 2019; Page No. 61-62

उमरिया जिले के हाईस्कूल में अध्ययनरत सामान्य एवं अनुसूचित संवर्गों के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का सामाजिक–आर्थिक स्तर से संबंध का तुलनात्मक अध्ययन

डॉ० सन्तोष कुमार द्विवेदी
सहायक प्राध्यापक, जे०पी० शिक्षा महाविद्यालय, जे०पी० नगर, रीवा, मध्य प्रदेश, भारत।

सारांश
प्रस्तुत शोध पत्र ''उमरिया जिले के हाईस्कूल में अध्ययनरत सामान्य एवं अनुसूचित संवर्गों के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का सामाजिक–अर्थिक स्तर से संबंध का तुलनात्मक अध्ययन'' पर आधारित है। शोधार्थी ने 100 छात्र एवं छात्राओं को उद्देश्यपूर्ण न्यादर्श के रूप में चुना। इन छात्र एवं छात्राओं पर डां. एस.एम. मोहासिन द्वारा निर्मित सामान्य बुद्धि की जाँच प्रपत्र का प्रयोग किया गया, जिनका दोनों ही सार्थकता स्तर 0.05 एवं 0.01 पर माध्यों का सार्थक अन्तर ज्ञात किया गया। प्राप्त परिणामों से स्पष्ट है, कि सामान्य एवं अनुसूचित संवर्ग के विद्यार्थियों की शैक्षिण उपलब्धि एवं सामाजिक आर्थिक स्तर में संबंध है।

मुख्य शब्द : उमरिया जिला, हाई स्कूल, शैक्षिक उपलब्धि, सामाजिक–आर्थिक स्तर।

1. प्रस्तावना
शिक्षा एक सद्देश्य प्रक्रिया है। शिक्षा प्रक्रिया के दौरान विद्यार्थियों के व्यवहार में परिमार्जन एवं संशोधन किया जा सकता है। शिक्षा प्रक्रिया में संलग्न व्यक्ति विभिन्न स्तरों के छात्रों के लिए शिक्षण उद्देश्य निर्धारित करते है। शैक्षिक उपलब्धि से तात्पर्य इन उद्देश्यों की प्राप्ति से है। विद्यार्थियों ने शैक्षिक उद्देश्यों को किस सीमा तक प्राप्त किया है, यही उनकी शैक्षिक उपलब्धि को दर्शाता है।

जोन्स के अनुसार – उपलब्धि परीक्षणों का प्रयोग यह निश्चित करने के लिए किया जाता है, कि कुछ समय तक अध्ययन करने के पश्चात् छात्र द्वारा क्या सीखा गया है? अर्थात् उसने किन–किन आदतों और कुशलताओं का विकास किया है। छात्र ने बौद्धिक लक्ष्य की और किस सीमा तक प्रगति की है। उसकी प्रगति अन्य सदसयों की तुलना में कितनी है।''

गैरेट के अनुसार – ''उपलब्धि परिक्षणों का प्रयोग छात्रों की सामान्य शैक्षिक स्तर या स्थिति और किसी विशेष विषय में उनके ज्ञान का निश्चय करने के लिए किया जाता है।''

2. अध्ययन के उद्देश्य
1. विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन करना।
2. सामान्य एवं अनुसूचित संवर्गो के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक एवं चिंतन परक अध्ययन करना।
3. विद्यार्थियों के सामाजिक–अर्थिक स्तर का शैक्षिक उपलब्धि से संबंध का अध्ययन।

3. परिकल्पना
प्रस्तुत अध्ययन में शैक्षिक उपलब्धि का विभिन्न सामाजिक–अर्थिक एवं मनोवैज्ञानिक कारकों के बीच संबंध की सार्थकता क पता लगाना है। इन कारकों के आधार पर सामान्य एवं अनुसूचित संवर्गो के विद्यार्थियों में अन्तर देखने का प्रयास किया जावेगा तथा शून्य परिकल्पना के आधार पर शोध परिकल्पना का निर्माण किया जावेगा। संभावित परिकल्पना निम्नानुसार है –

"सामान्य एवं अनुसूचित संवर्ग के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि एवं सामाजिक–आर्थिक स्तर में कोई सार्थक संबंध नहीं पाया जाएगा।"

4. शोध विधि
प्रस्तुत शोध अध्ययन में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।

5. शोध प्रविधि
प्रस्तुत अध्ययन में प्रतिदर्श के रूप में कक्षा 10वीं में अध्ययन 100 विद्यार्थियों (50 छात्र एवं 50 छात्राएँ) को सम्मिलित किया जावेगा। इन विद्यार्थियों की संभावित आयु लगभग 16 वर्ष होगी। चयनित विद्यालयों में से 50 सामान्य वर्ग एवं 50 अनुसूचित संवर्ग के विद्यार्थियों का चयन दैव निदर्शन पद्धति से किया जायेगा।

6. उपकरण
प्रस्तुत अध्ययन के उद्देश्य के लिए उपलब्ध समय, प्रतिदर्श के स्वरूप और अध्ययन किये जा रहे चरों को दृष्टिगत रखते हुए प्रदत्त संकलन हेतु निम्नांकित परीक्षण का प्रयोग किया जायेगा–
सामाजिक–आर्थिक स्तर मापनी – डॉ. एस.पी. कुलश्रेष्ठ

7. साँख्यिकीय प्रविधियाँ
अध्ययन में मध्यमान एवं प्रमाणिक विचलन के आधार पर अध्ययन कर 't' परीक्षण द्वारा दो समूहों के मध्य अन्तर की सार्थकता ज्ञात की गयी है।

8. पूर्व अध्ययन समीक्षा
पूर्ववर्ती अध्ययन से तात्पर्य अनुसंधान की समस्या से सबन्धित उन सभी प्रकार की पुस्तकों, ज्ञान कोशों, पत्र–पत्रिकाओं, शोध पत्रों तथा अभिलेखों आदि से है, जिनके अध्ययन से अनुसंधानकर्ता को अपनी समस्या के चयन, परिकल्पनाओं के निमार्ण, अध्ययन की रूपरेखा तैयार करने तथा कार्य को आगे बढ़ाने में सहायता मिलती है इनमें से मुख्य रूप से शर्मा (2007)[2], मंगल (2005)[3], पाठक (20013)[4], गुप्ता (1997)[5], भोलेराव (2015)[6], त्रिपाठी (2007)[7] एवं प्रसाद गोमती (2009)[8] ने शोध विषय से सम्बन्धित कार्य किये है।

9. परिणामों का सारणीयन एवं विश्लेषण

क्र.	तुलनात्मक समूह	N	Mean	S.D.	d.f.	t -value
1	सामान्य विद्यार्थियों के उपलब्धि का सामाजिक–आर्थिक स्तर से संबंध	50	53.4	14.45	98	5.2
2	अनुसूचित संवर्ग के विद्यार्थियों के शैक्षिक उपलब्धि का सामाजिक–आर्थिक स्तर से संबंध	50	36.5	17.60		

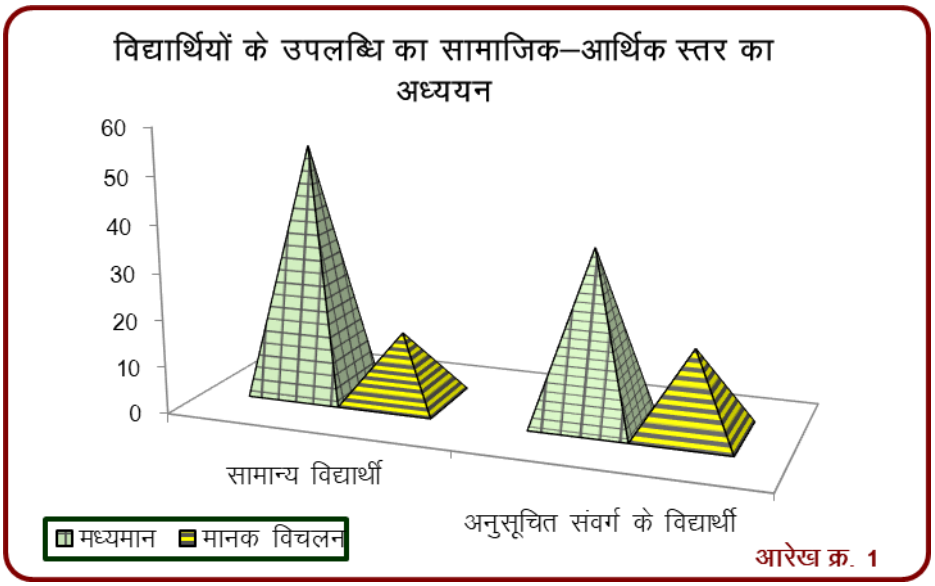

आरेख क्र. 1

उपर्युक्त सारिणी से स्पष्ट है, कि सामान्य एवं अनुसूचित संवर्ग के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का सामाजिक–आर्थिक स्तर से संबंध का मध्यमान क्रमशः 53.4 एवं 36.5 है, एवं प्रमाणिक विचलन का मान क्रमशः 14.5 एवं 17.60 है, जो कि स्वतंत्रता के अंश 98 पर दोनो ही सार्थकता स्तर 0.01 एवं 0.05 के सारिणी मान से अधिक है।

यहाँ पर गणनीय t का मान 5.2 प्राप्त हुआ है। सारणी मूल्य 98 d.f. पर 95 प्रतिशत विश्वास स्तर पर 1.98 एवं 99 प्रतिशत विश्वास स्तर पर 2.36 है। इस प्रकार गणनीय मान दोनों सार्थकता स्तर के सारिणी मूल्य से अधिक है।

अतः प्रस्तुत शोध परिकल्पना निरसित होती है। परिणाम स्वरूप यह स्पष्ट है, कि सामान्य एवं अनुसूचित संवर्ग के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि एवं सामाजिक–आर्थिक स्तर में सार्थक संबंध है।

10. निष्कर्ष

उमरिया जिले के हाईस्कूल में अध्ययनरत सामान्य एवं अनुसूचित संवर्गों के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का सामाजिक–अर्थिक स्तर से संबंध का तुलनात्मक अध्ययन के पश्चात् यह निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि सामाजिक–आर्थिक स्तर का संबंध शैक्षिक उपलब्धि से है। अर्थात् सामान्य एवं अनुसूचित संवर्ग के विद्यार्थियो की शैक्षिक उपलब्धि एवं सामाजिक–आर्थिक स्तर में सार्थक संबंध है।

11. संदर्भ

1. मासिक छात्र युवा (स्वामी विवकानंद की शिक्षा दर्शन), भारतीय शिक्षा पद्धति विशेषांक, अंक 5 नवम्बर–1999
2. शर्मा, राजकुमारी, श्रीवास्तव एस.बी.एन., दुबे, एस.के. (2007)–भारतीय शिक्षा और उसकी समस्यायें। राधा प्रकाशन मंदिर, आगरा।
3. मंगल, एस.के. एवं मंगल श्रीमती शुभ्रा (2005) – विद्यार्थी विकास एवं शिक्षण अधिगम प्रक्रिया, लायल बुक डिपो.
4. पाठक, पी.डी. एवं मंगल, एस.के. (2013) – अधिगमकर्ता का विकास एवं शिक्षण अधिगम प्रक्रिया, अग्रवाल पब्लिकेशन्स.
5. गुप्ता, एस.पी. (1997) : सांख्यिकी विधियाँ, शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद.
6. भालेराव, चन्द्रकान्ता एवं श्रीवास्तव, आशा (2015) – माध्यमिक स्तर पर मध्यप्रदेश में आदिवासी शिक्षा का विकास, रिसर्च लिंक, 135 Vol. XIV(4), pp. 117-118.
7. त्रिपाठी रेणु एवं त्रिपाठी, अर्पणा (2007), भारत में प्राथमिक शिक्षा, प्रथम संस्करण, ओमेगा पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली
8. प्रसाद, गोमती (2009), रीवा संभाग की अनुसूचित जाति एवं जनजाति के बालक–बालिकाओं की शैक्षिक स्थिति का समीक्षात्मक अध्ययन, पी–एच.डी. शिक्षा, अ.प्र.सिंह वि.वि., रीवा.